इष्टोपदेश (फोल्डर नं. ०१४७७)

श्रीमद् देवनंदि विरचित

संस्कृत टीका – आशाधरजी, धन्यकुमारजी जैन

हिंदी अनुवाद – शीतलप्रसादजी

मराठी अनुवाद - अज्ञातकवी

श्री चम्पतरायजी विद्यावारिधि– अंग्रेजी टीका

विस्तृत अंग्रेजी पद्यानुवाद - जयभगवानजी जैन

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय निवेदन (प्रथमावृत्ति)

प्रकाशकके दो शब्द (तृतीय संस्करण)

प्रस्तावना (प्रथम संस्करण)

श्रीमद् राजचंद्र

विषयसूची

इष्टोपदेश (टीकात्रय एवं पद्यानुवाद चतुर्युक्त) ---------- १-५२

मंगलाचरण-टीकाकार और मूल ग्रन्थकर्त्ता ---------- १

स्वयंस्वभावाप्ति का समाधान ----------२

व्रतादिकोंकी सार्थकता ----------३

आत्म-परिणामीके लिये स्वर्गकी सहजममें ही प्राप्ति ---------- ५

स्वर्ग-सुखोंका वर्णन ---------- ६

सांसारिक स्वर्गादि सुख भ्रान्त है इसका कथन... ---------- ७

यदि ये वासनामात्र हैं, तो उनका वैसा अनुभव क्यों नहीं होता... ---------- ९

मोहनीयकर्मके जालमें फँसा प्राणी शरीर, धन द्वारा को आत्माके समान मानता है... ---------- १०

जीव-गति वर्मन, अपने शत्रुओं के प्रति भी द्वेषभाव मत करो ----------१२

राग-द्वेष भावसे आत्माका अहित होता है ----------१३

संसारमें सुख है तो फिर इसका त्याग क्यों किया जाय.... ---------- १४

सांसारिक सुख तथा धर्म, आदि मध्य और अन्तमें दुःखदायी हैं ---------- १६

धनसे आत्माका उपकार होता है.... ---------- १७

धन से पुण्य करूँगा, इसलिये कमाना चाहिए... ----------१८

भोगोपभोग कितने भी अधिक भोगे जायेंगे कभी तृप्ति न होगी ---------- १९

शरीरके सम्बन्धसे पवित्र पदार्थ भी अपवित्र हो जाते हैं... ----------२१

जो आत्माका हित करता है, वह शरीरका अपकारी है.... ---------- २२

ध्यानके द्वारा उत्तम फल और जघन्य फल.... ---------- २२

आत्मस्वरूप वर्णन ---------- २३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनको एकाग्र कर इन्द्रियोंके विषयाको नष्ट कर.... ---------- २५
अज्ञभक्ति अज्ञानको, ज्ञानभक्ति ज्ञानको देती है..... ---------- २७
आत्मामें आत्माके चिन्तनरूप ध्यानसे, परीषहादिका अनुभव न होनेसे.... ---------- २८
जहाँ आत्मा ही ध्याता और ध्येय हो जाता है... ---------- ३०
मोही कर्मोको बाँधता है और निर्मोही छूट जाता है... ----------३१
मैं एक ममता रहित शुद्ध हूँ, संयोगसे उत्पन्न पदार्थ.... ---------- ३२
देहादिकके सम्बन्धसे प्राणी दुखःसमूह पाते हैं.... ---------- ३३
ज्ञानी सदा निःशंक हैं, क्योंकि उसमें रोग....---------- ३४
पुद्गलोंको बार-बार भोगे और छोड़े..... ---------- ३५
कर्म-कर्मका भला चाहता है जीव-जीवका सब.... ---------- ३६
परका उपकार छोड़कर अपने उपकारमें तत्पर होओ.... ---------- ३७
गुरुके उपदेशसे अपने और परके भेदकी जो जानता है.... ---------- ३८
स्वयं हो स्वयंका गुरु है ---------- ३९
अभव्य हजारों उपदेशोंसे ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है.... ---------- ४०
स्वात्मावलोकनके अभ्यासका वर्णन ---------- ४१
स्वात्मसंवित्ति बढ़नेपर आत्मपरिणत ---------- ४२
योगी निर्जन और एकान्तवास चाहता है... ---------- ४४
ध्यानमें लगे योगीकी दशाका वर्णन ---------- ४६
आत्मस्वरूपमें तत्पर रहनेवालेको परमानन्दकी प्राप्ति ---------- ४७
परद्रव्योंके अनुराग करनेसे होनेवाले दोषोंका वर्णन ---------- ४८
तत्त्वसंग्रहका वर्णन ---------- ४९
तत्त्वका सार-वर्णन---------- ५०
शास्त्रके अध्ययनका साक्षात् और परम्परासे होनेवाले फलका वर्णन ---------- ५१
उपसंहार और टीकाकारका निवेदन ---------- ५२
परिशिष्ट---------- ५३-९६
परिशिष्ट-१ – मराठी अनुवाद ---------- ५३
परिशिष्ट-२ - गुजराती अनुवाद ---------- ५५
परिशिष्ट-३ – अंग्रेजी अनुवाद (The Discourse Divine)---------- ५७
परिशिष्ट-४ – अंग्रेजी विस्तृत पद्यानुवाद (Happy Sermons) ----------७८
Foreword
Contents
Introduction---------- 80
Versified Sermons----------81-92
Obisance---------- 81
God and Self---------- 81
Path of Peace and Piety---------- 81
Philosophy of pain and pleasure ---------- 82

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ignorance the cause of all ills ---------- 82
Worldly life is a chain of pains ---------- 83
Wealth is no remedy for worldly ills---------- 83
Concentrated thought is the only remedy---------- 84
Self is the only thing worth realization ---------- 85
Path of self realization ---------- 85
Superiority of a devotee ---------- 86
The unreality of worldly life ---------- 86
The Path of victory ---------- 87
The unholy union ---------- 87
The divinity of self ---------- 87
Futility of worldly quest---------- 87
The sgruggle oflife ---------- 88
Appeal to self ---------- 88
Master's role in spiritual culture ---------- 89
Self is his own guide---------- 89
The essential requisites of a devotee---------- 89
Life features of a yogi ---------- 89
Yogi enjoys a free life ---------- 90
Self culture is the best culture ---------- 90
Summum bonum of life ---------- 91
Brief story of truth ---------- 91
Blessings ---------- 92
परिशिष्ट-५ – मूल श्लोकोंकी वर्णानुक्रमणिका ---------- ९०
परिशिष्ट-६ – उद्धृत श्लोकों गाथाओं ओर दोहोंकी वर्णानुक्रमणिका ---------- ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org